डॉल्फिन
दोस्ती की एक सच्ची कहानी

दोस्ती की एक सच्ची कहानी

विंटर नाम की एक बहुत ही खास डॉल्फिन और
सॉयर नाम के लड़के के बीच दोस्ती की सच्ची कहानी.

विंटर बहुत परेशानी थी. सॉयर देख सकता है कि डॉल्फिन को चोट लगी थी और वह जानता था कि उसे उसकी मदद करनी होगी.
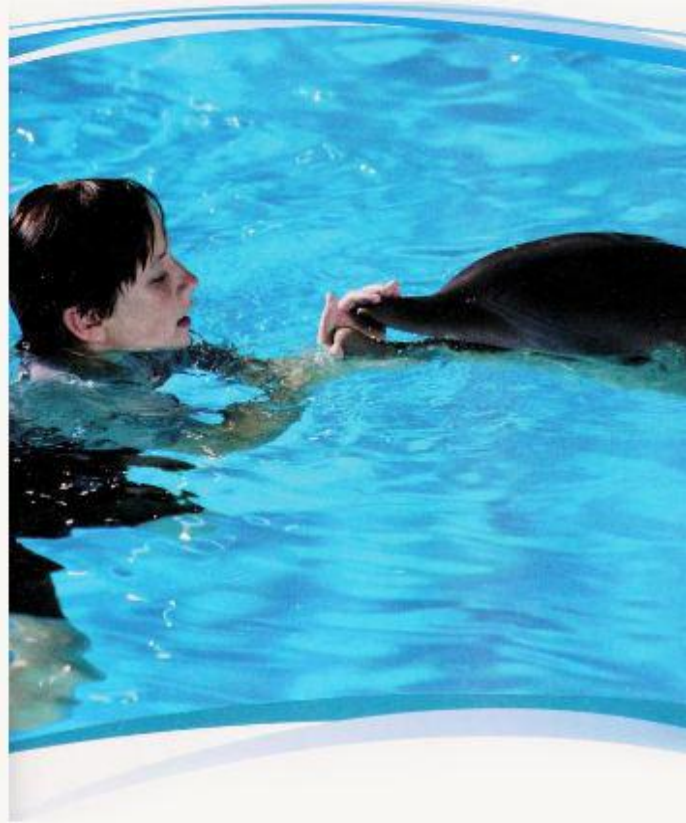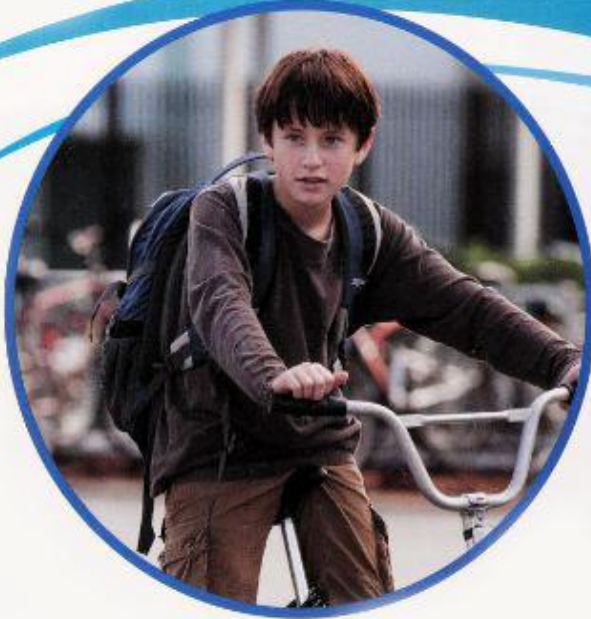
एक दिन, सॉयर अपनी साइकिल की सवारी कर रहा था जब उसे समुद्र तट पर एक डॉल्फिन पड़ी दिखी. विंटर समुद्र में तैर रही थी, लेकिन वो किनारे के बहुत करीब आई. फिर उसकी पूंछ एक केकड़े के जाल में फंस गई!

सॉयर को याद आया कि उसके बैग में एक छोटा चाक़ू था. उसने चाकू का इस्तेमाल करके विंटर को जाल से मुक्त कराया. विंटर ने सॉयर को देखा और एक हल्की सी सीटी बजाई, जैसे कि वो "धन्यवाद" कह रही हो.
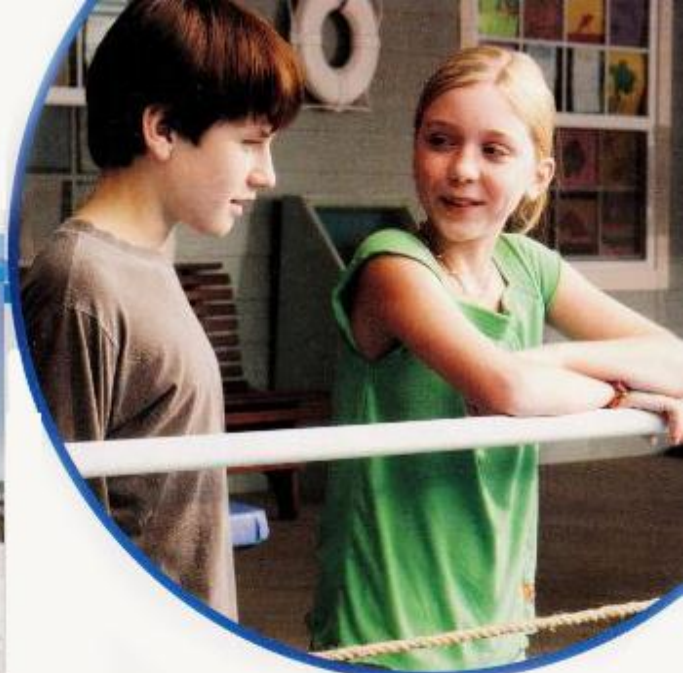
जल्द ही, स्थानीय मरीन (समुद्री) अस्पताल से बचाव कर्मी भी वहां आ पहुंचे. वे विंटर को अस्पताल ले गए. अगले दिन सॉयर अस्पताल में विंटर को देखने गया. वहां उसकी मुलाकात डॉक्टर हास्कट की बेटी हेज़ल से हुई. डॉक्टर हास्कट, मरीन हॉस्पिटल के प्रमुख थे.

विंटर, पानी के एक बड़े ताल में फीबी के साथ थी. सॉयर ने उसे देखा. फीबी, डॉलफिन की ट्रेनर् थी. विंटर की पूंछ में एक पट्टी बंधी थी. विंटर की आँखें बंद थीं और वो बिल्कुल हिल-डुल नहीं रही थी.

जैसे ही सॉयर ने फीबी से बात की, वैसे ही विंटर ने अपनी आँखें खोलीं. उसने सॉयर की तरफ देखा और फिर से एक हल्की सी सीटी बजाई! डॉलफिन अपने दोस्त को देखकर खुश थी.

अगले दिन सॉयर दुबारा विंटर को देखने गया. डॉलफिन के ट्रेनर चिंतित थी क्योंकि विंटर ने अभी भी तैरने की कोशिश नहीं की थी.

लेकिन, जब उसने सॉयर को देखा, तो विंटर ने अपने शरीर को झकझोरा, और सॉयर के करीब जाने की कोशिश की. सॉयर ने धीरे-धीरे अपना हाथ आगे बढ़ाकर विंटर के सिर को छुआ. विंटर ने एक आह भरी. उसका दोस्त जो वहां था.

उसके बाद से सॉयर हर दिन अस्पताल जाता. हर दिन सॉयर, विंटर को बेहतर होते हुए देख सकता था. सॉयर और हेज़ल ने विंटर की मदद करने के लिए विशेष भोजन बनाए.
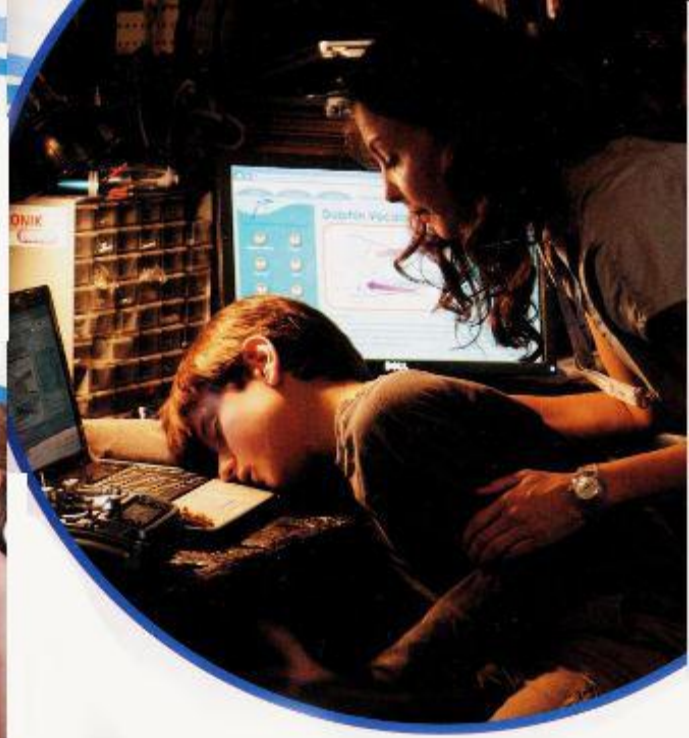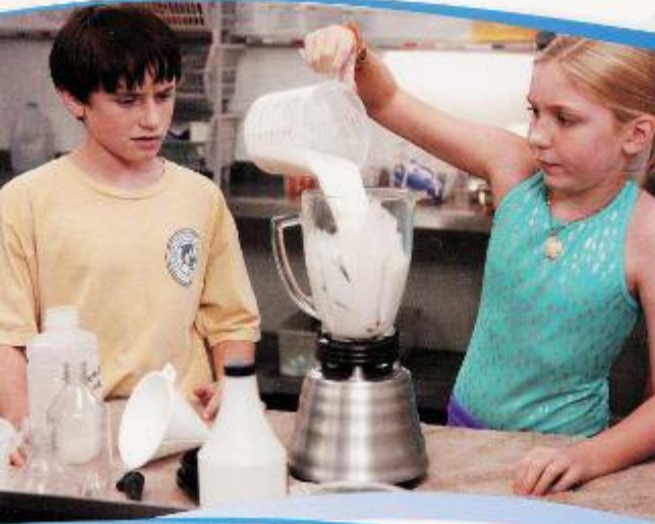
रात में नींद आने तक सॉयर, डॉल्फिंस पर शोध करता रहता था!

विंटर अभी भी सामान्य डॉलफिन जैसे तैर नहीं सकती थी, लेकिन वह पानी की सतह पर पड़ी रहती थी. वो अपने पंखों को हिलाकर ताल में चारों ओर घूमती थी. वो सॉयर के साथ खेलती थी. वो अपने पंखों को हिलाकर सॉयर पर पानी के छींटे फेंकती थी.

विंटर को खिलौनों से खेलना भी बहुत पसंद था. वह कभी-कभी अपने मुंह से सॉयर के हाथ का खिलौना पकड़ती थी. फिर वो सॉयर को खिलौने के साथ ताल में खींचने की कोशिश करती थी!
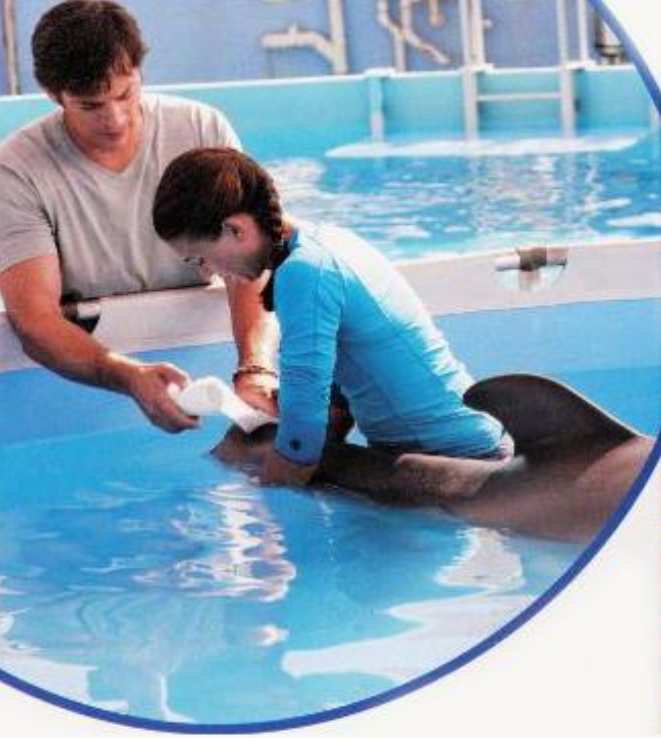
एक दिन, ट्रेनर्स ने विंटर की पीठ पर एक सूजन देखी. फिर डॉ. हास्केट ने विंटर की रीढ़ का एक्स-रे लिया.

एक्स-रे से पता चला कि जिस तरह से वो तैर रही थी उससे विंटर की रीढ़ की हड्डी क्षतिग्रस्त हो रही थी. सामान्य डॉल्फ़िन अपने शरीर को ऊपर-नीचे करके तैरेती हैं, पर विंटर वैसा नहीं कर रही थी.

डॉ. हास्केट ने बताया कि मनुष्य और डॉल्फ़िन दोनों में रीढ़ की हड्डी उनके हृदय, गति और सांस को नियंत्रित करती है. यदि विंटर ने अपने शरीर को ऊपर-नीचे करके सीखना शुरू नहीं किया तो उसकी रीढ़ की हड्डी खराब हो सकती थी. वो मर भी सकती थी.
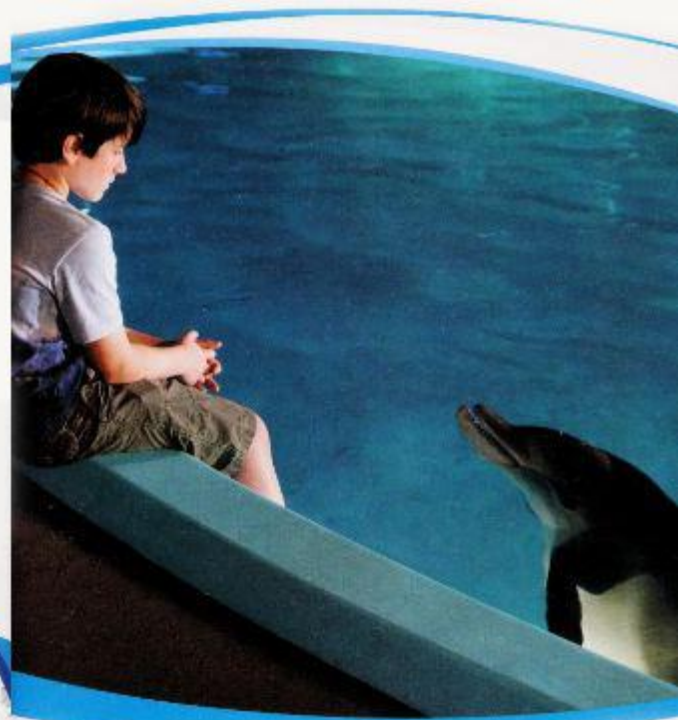
इस वजह से सॉयर, विंटर के लिए बहुत चिंतित था. लेकिन उसे पता नहीं था कि वो क्या करे.....
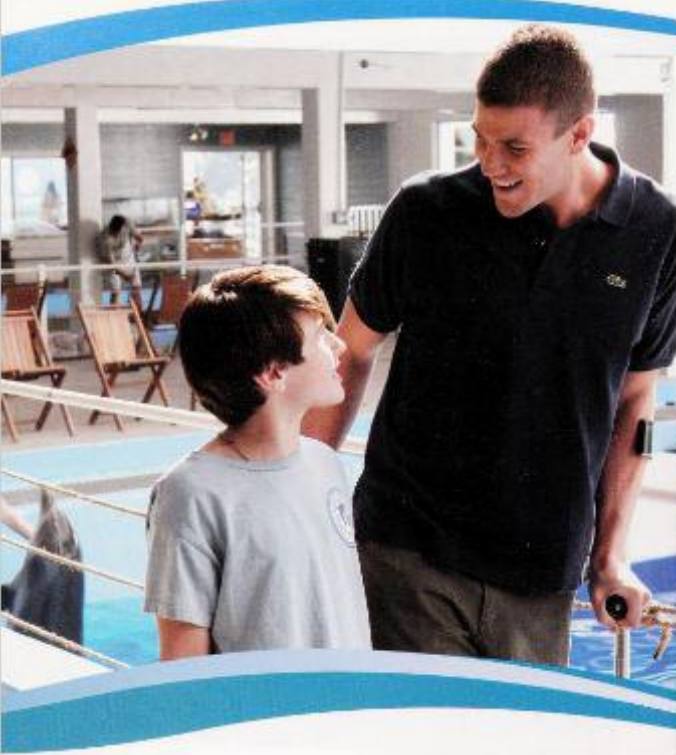
कृत्रिम अंगों को "प्रोस्थेटिक्स" कहा जाता है. सॉयर सोच रहा था कि क्या डॉ. मैक्कार्थी, विंटर के लिए एक प्रोस्थेटिक पूंछ बना पाएंगे?

खुशखबरी!

डॉ. मैक्कार्थी, विंटर को देखने आने को तैयार हो गए.

सॉयर ने अपने चचेरे भाई काइल से बात की. सेना में सेवा के दौरान काइल के पैर को चोट लगी थी.

डॉ. मैक्कार्थी नाम के एक डॉक्टर ने चलने में मदद के लिए काइल के लिए प्लास्टिक की कृत्रिम जुगाड़ बनाई थी. काइल के अनुसार डॉ. मैक्कार्थी प्लास्टिक के कृत्रिम पैर भी बनाते थे.

डॉ. मैक्कार्थी ने पहले चरण में उस हिस्से का एक सांचा बनाया जहां कभी विंटर की पूंछ हुआ करती थी.

डॉक्टर ने विंटर की नई पूंछ बनाने के लिए मोल्ड का उपयोग किया. अब विंटर अपनी नई पूंछ टेस्ट कर सकती थी.
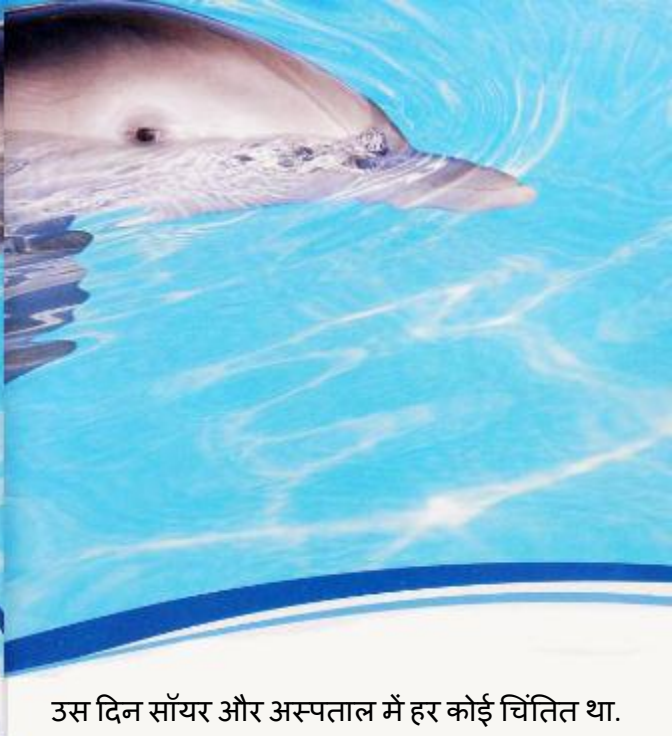
उस दिन सॉयर और अस्पताल में हर कोई चिंतित था. क्या विंटर अपनी नई पूंछ का इस्तेमाल कर पायेगी? डॉ. मैक्कार्थी की प्रोस्थेटिक जुगाड़ लगाने के बाद विंटर को ताल में रखा गया.

उन्होंने धीरे से विंटर को छोड़ने की कोशिश की, लेकिन वो चिल्लाने और इधर-उधर भागने लगी. विंटर को अपनी नई पूंछ पसंद नहीं आई और वो पूँछ को लगातार पूल की दीवार से मारती रही. अंत में पूँछ टूट गई.

सॉयर और अन्य लोग यह देखकर बहुत दुखी हुए.

लेकिन डॉ. मैक्कार्थी अभी भी हार मानने को तैयार नहीं थे.
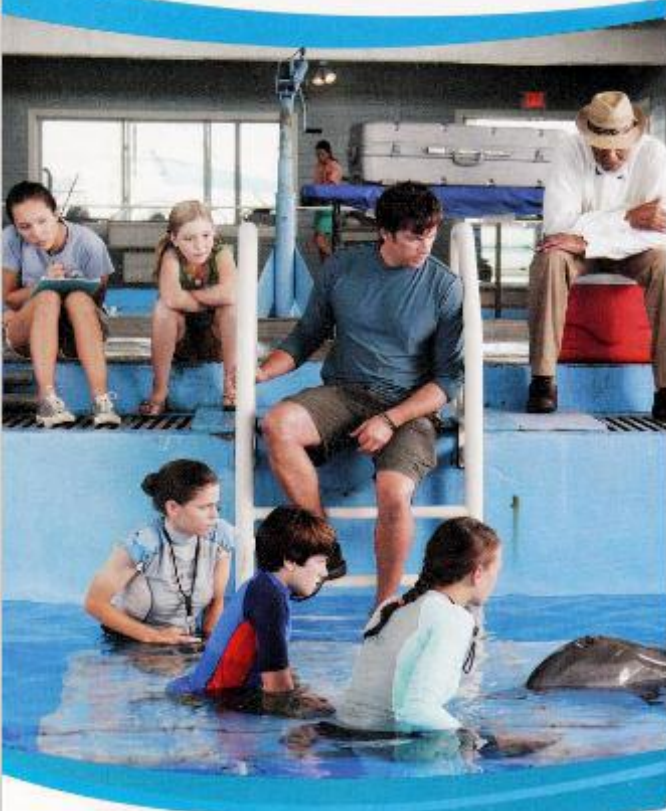
उन्होंने विंटर के लिए एक नए लाइनर के साथ एक अलग ढंग का प्रोस्थेटिक बनाने का फैसला किया.
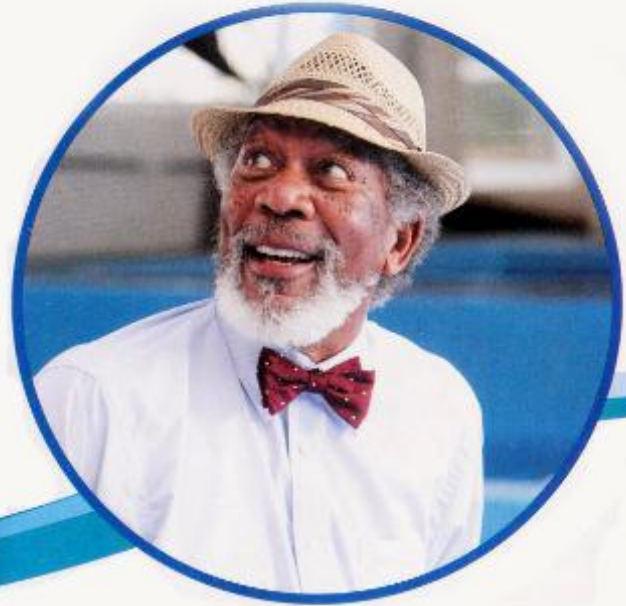
फिर विंटर की नई और बेहतर पूंछ का परीक्षण करने का समय आया. जब वो प्रोस्थेटिक (कृत्रिम जुगाड़) फिट हुई तब अस्पताल के सभी लोगों ने अपनी सांस रोक कर रखी.

विंटर ने अपनी नई पूंछ देखी और उसे हिलाया.

वो धीरे-धीरे अपनी पूंछ को ऊपर-नीचे, ऊपर-नीचे हिलाने लगी...... अब वो तैर रही थी! विंटर अब ठीक होने वाली थी.

एक बहादुर लड़के की ख़ास मित्रता और कुछ नेकदिल लोगों की मदद से उस डॉल्फिन को एक नई पूंछ मिली और उसने फिर से तैरना सीखा.

डॉल्फिन तथ्य

- विंटर एक बॉटल-नोज़ डॉल्फिन है.
- डॉल्फ़िन चाहें मछली की तरह दिखती हो, लेकिन वे इंसानों की तरह ही एक स्तनधारी है.
- डॉल्फ़िन अपने सिर के ऊपर स्थित ब्लो-हॉल से साँस लेती है.
- बॉटल-नोज़ डॉल्फ़िन 10 से 14 फीट लम्बी हो सकती है और उसका वजन 1,100 पाउंड तक हो सकता है.
- डॉल्फ़िन, हमेशा समूहों में तैरती हैं. उन समूहों को "फली" कहते हैं.
- डॉल्फ़िन मुख्य रूप से मछली खाती हैं, लेकिन वे स्क्विड और झींगा भी खाती हैं.

समाप्त

असली विंटर

असली विंटर डॉल्फ़िन खुश और स्वस्थ है.

वो फ्लोरिडा के

क्लियरवॉटर मरीन एक्वेरियम

में रहती है.